

“मीठे बच्चे-तुम सबका प्राण आधार आया है तुम्हें जमघटों के दुःखों की पीड़ा से छुड़ाने,
वह तुम्हें स्वर्ग का वर्सा देता, वह सर्वव्यापी नहीं है”

प्रश्न:- इस राजयोग में कौन-सा योग सदा कम्बाइण्ड है?

उत्तर:- इस राजयोग में प्रजायोग सदा ही कम्बाइण्ड है क्योंकि राजा-रानी के साथ-साथ प्रजा भी चाहिए। अगर सब राजा बन जायें तो किस पर राज्य करेंगे? सब कहते हैं हम महाराजा-महारानी बनेंगे, हम राजयोग सीखने आये हैं। परन्तु राजा-रानी बनने के लिए तो बहुत हिम्मत चाहिए। पूरा बल होना चाहिए। बाप पर पूरा-पूरा बलि चढ़े तब राजाई में जा सकें।

गीत:- प्रीतम आन मिलो...

ओम् शान्ति। प्रीतम को कौन बुलाते हैं? प्रीतमा को सजनी वा भक्ति कहा जाता है। बुलाते हैं साजन को, भगवान को अथवा बाप को। इसमें सर्वव्यापी का ज्ञान तो ठहरता नहीं। प्रीतम को बुलाते हैं कि आन मिलो। जीव-आत्मायें अपने परमपिता परमात्मा को बुलाती हैं—ओ परमपिता परमात्मा आओ, रहम करो। स्वर्ग में तो ऐसे नहीं बुलायेंगे। बरोबर यह दुःखधाम है तो प्रीतम को बुलाते हैं। प्रीतम भगवान एक है। क्रियेटर एक है। विश्व अथवा सृष्टि का चक्र भी एक है। बच्चे जानते हैं कि कलियुग से फिर सतयुग होगा। सतयुग में फिर से एक आदि सनातन देवी-देवताओं का राज्य होगा। यह नॉलेज है ना। तुम बच्चे जानते हो प्रीतम कैसे आये हैं। शिव तो है निराकार। तुम सब निराकारी आत्मायें हो। यहाँ आये हो पार्ट बजाने। अब निराकार बाप कैसे आया? राजयोग किसने सिखलाया? कृष्ण तो नहीं सिखला सकता। वह तो सतयुग स्थापन करने वाला नहीं है। उनको रचता नहीं कहेंगे। सभी जीव आत्माओं का प्रीतम एक परमपिता परमात्मा क्रियेटर निराकार को कहेंगे। कहते हैं—मेरा जन्म शिव जयन्ति मनाते हैं। मेरा जन्म कोई कृष्ण सदृश्य नहीं होता। कृष्ण कैसे माँ के गर्भ से जन्म लेता है—वह भी बच्चों को साक्षात्कार कराया हुआ है। बाप कहते हैं मेरा नाम रुद्र भी है। गीता में भी है - यह है रुद्र ज्ञान यज्ञ अर्थात् शिव का रचा हुआ यज्ञ। तो जरूर निराकार शिव को साकार में आना पड़े। बाप बैठ समझाते हैं—इस गीत के दो अक्षर से ही सर्वव्यापी का ज्ञान निकल जाता है। प्रीतम को कृष्ण नहीं कहेंगे। कहते ही हैं—ओ गॉड फादर। ओ प्राण आधार क्योंकि यह सबका प्राण आधार है। सभी को जमघटों के दुःख की पीड़ा से छुड़ाते हैं, तो जरूर उनको आना पड़े। बाप कहते हैं मैं कल्प-कल्प कल्प के संगमयुगे आता हूँ। यही कल्याणकारी संगमयुग है। सतयुग के बाद तो फिर दो कला कम हो जाती है। यही संगमयुग चढ़ती कला का युग है, इसमें बुद्धि से काम लेना चाहिए। नये के लिए तो बहुत सहज समझाते हैं। तुम्हारा बाप निराकार परमपिता परमात्मा शिव है। उनको याद करो, बस। और गुरु गोसाईं आदि के मन्त्र सब हैं भक्ति मार्ग के। भक्ति आधा-कल्प चलती है फिर ज्ञान का वर्सा आधा-कल्प चलता है। ज्ञान वहाँ नहीं रहेगा। ज्ञान दिया जाता है दुर्गति से सद्गति में ले जाने के लिए। गुरु का काम है शिष्य अथवा फालोअर्स की गति-सद्गति करना। परन्तु वह जानते नहीं कि गति-सद्गति क्या होती है। गाते भी हैं सर्व का सद्गति दाता राम। पतित-पावन सर्व सीताओं का राम। बच्चे जानते हैं कि सतयुग

पवित्र अपवित्र कहो या गुण अवगुण सम्पन्न कहो या भ्रष्टाचार, श्रेष्ठाचार कहो। यह सभी अक्षर आचरण के ऊपर हैं।

चार भुजा का भी अर्थ है - दो भुजा नारी की, दो भुजा नर की। तो नर नारी जब पवित्र हैं तो चतुर्भुज का डबल क्राउन, किंगडम का सिम्बल दिखाते हैं। ऐसी राजाई जब थी तो उस राजाई में सभी नर नारी सुखी थे तो उसे चतुर्भुज के रूप में दिखलाया है और रावण को 10 शीश वाला दिखाते हैं, उसका भी अर्थ है। 10 शीश वाला कोई आदमी नहीं होता। यह भी एक विकारों का सिम्बल है, जब अपवित्र प्रवृत्ति है तो 5 विकार स्त्री के और 5 विकार पुरुष के मिला करके 10 शीश दिखा दिये हैं। तो यह नर नारी जब अपवित्र हैं तो संसार ऐसा दुःखी है और जब नर नारी पवित्र हैं तो संसार सुखी है। जब मनुष्य पवित्र हैं तो नेचुरल हेल्दी हैं और उसकी बनावट, फीचर्स, नैचुरल ब्युटी आदि इसका फ़र्क हो सकता है। बाकी ऐसे नहीं कि उसमें कोई 3 आँखें या 10 सिर... की बनावट होगी।

बाप कहते हैं देखो, यह ज्ञान का नेत्र है। इस नॉलेज के नेत्र से ही सदा सुख शान्ति प्राप्त कर सकते हो। यहाँ तो सब इन्सान खोजते-खोजते थक गये हैं, जितना खोज कर रहे हैं उतना और ही दुःख-अशान्ति बढ़ता जा रहा है। देखो, खोज तो सुख के लिये करते हैं लेकिन फिर भी उनसे वही चीज़ें बनती जा रही हैं जो और ही दुःख देने वाली हैं। अब यह बॉम्ब्स आदि क्या-क्या चीज़ें निकाली हैं। नहीं तो यही साईस अगर अच्छी तरह से उपयोग (काम) में लगाई जाए तो बहुत चीज़ों से सुख मिल सकता है। परन्तु विनाश काले विपरीत बुद्धि है ना, इसलिए उस बुद्धि से काम ही उल्टा हो रहा है। अभी यह समय ही विनाश का है इसलिए बुद्धि काम ही उल्टा करती है, दुनिया के नाश का ही सोचती है। इसलिए कहते हैं विनाश काले विपरीत बुद्धि। विपरीत बुद्धि किससे? परमात्मा से। तो अभी किसी की भी प्रीत परमात्मा से नहीं है। माया से सबकी प्रीत हो गई है।

कई फिर समझते हैं कि हम इन आंखों से जो भी देखते हैं यह माया है, यह शरीर भी माया है, यह संसार भी माया है, यह धन सम्पत्ति भी माया है परन्तु माया इसको नहीं कहेंगे। धन सम्पत्ति तो देवताओं के पास भी थी। शरीर तो देवताओं का भी था और संसार में तो देवतायें भी थे, फिर क्या वो माया थी क्या? नहीं। माया कहा जाता है 5 विकारों को। विकार ही माया हैं और यह माया ही दुःख देती है, बाकी धन-सम्पत्ति कोई दुःख देने की चीज़ नहीं है। सम्पत्ति तो सुख का साधन है, परन्तु उस सम्पत्ति को भी इम्प्युअर, अपवित्र किसने बनाया है? 5 विकारों (माया) ने। तो माया रूपी विकारों के कारण हर चीज़ दुःख का कारण बन गई है। अभी धन से भी दुःख, शरीर से भी दुःख, हर चीज़ से अभी दुःख प्राप्त हो रहा है क्योंकि हर चीज़ में अभी माया प्रवेश हो गई है, इसलिये बाप कहते हैं अभी इस माया को निकालो तो फिर तुमको इसी शरीर से, सम्पत्ति से और संसार से सदा सुख मिलेगा, जैसे देवताओं को था।

तो माया से बचना माना ऐसे नहीं कि शरीर से ही निकल जाना है या हम संसार में ही नहीं आये, ऐसे भी कई समझते हैं कि यह संसार ही माया है या कह देते हैं जगत मिथ्या है लेकिन जगत मिथ्या नहीं, जगत तो अनादि है, इसको मिथ्या बनाया गया है। विकारों के कारण मनुष्य दुःखी हुए हैं। अब इस संसार को पवित्र बनाना है। यह संसार पवित्र था, उस पवित्र संसार में देवता रहते थे, वह भी इसी संसार के मनुष्य थे। देवताओं की दुनिया कोई ऊपर थोड़ेही है। हम मनुष्य ही जब देवता थे तब उस

संसार को स्वर्ग अथवा हेवन कहते थे। हम मनुष्य ही स्वर्गवासी थे यानि वह टाइम स्वर्ग का था। और हमारी जनरेशन स्वर्ग में चलती थी, तो इन सभी बातों का समझकर अभी माया को मिटाना है यानी विकारों को जीतना है क्योंकि यह धन भी अभी विकारी कर्म के हिसाब से होने के कारण उससे भी दुःख होता है, शरीर भी विकारी खाते का होने के कारण उसमें रोग, अकाले मृत्यु होती रहती है जिससे दुःख मिलता है। नहीं तो हमारे शरीर में कभी रोग नहीं था, कभी अकाले मृत्यु नहीं होता था क्योंकि पवित्रता (निर्विकारिता) के बल से बना हुआ था, अभी विकारों से बना हुआ है इसलिये इसमें दुःख है। अभी इन दुःखों से निकालने और संसार को सुखी बनाने के लिए उसको (परमात्मा को) बुलाते हैं। तो अभी देखो बाप हमें ज्ञान का नेत्र (समझ) दे रहे हैं, उसे बुद्धि में धारण करना है। यह ज्ञान का तीसरा नेत्र हम ब्राह्मणों के पास है, देवताओं के पास नहीं है। पहले हम शुद्र थे, शुद्र माना विकारी, अभी विकारी से पवित्रता के मार्ग पर अपना पाँव रखा है। तो हम ब्राह्मण हो गये। ब्राह्मणों को ही तीसरी आँख है और देवतायें हैं तो फिर प्रालब्ध है। देवताओं को फिर ज्ञान नेत्र की जरूरत नहीं है। इसलिए जो भी अलंकार हैं शंख, चक्र, गदा, पदम आदि यह सब हम ब्राह्मणों के हैं, देवताओं के नहीं।

यह शंख भी ज्ञान का है, परन्तु भक्ति मार्ग में उन्होंने वह चीज़ें स्थूल रख दी हैं। गदा माना 5 विकारों के ऊपर हमने विजय पाई है। चक्कर है यह चार युगों का। हम पहले सो देवता थे फिर कैसे नीचे आये, अभी फिर बाप आया है ऊंचा उठाने के लिये। तो यह सारा चक्कर अभी हमने अपना पूरा किया है। तो यही है स्वदर्शन चक्र यानि स्व को अभी दर्शन अर्थात् साक्षात्कार हुआ है। कोई कहे यह पुराना कैसे हुआ? अरे! यह नियम है। समय पर पुराना होना ही है। जब पुराना हो तब नया बनाया जाए। तो यह सारी चीज़ें समझने की हैं। हर चीज़ का, हर बात का कैसा-कैसा नियम है। इसलिये अभी हमको पुरुषार्थ करके ऊंचा उठना है, नया बनना है। बाकी ऐसे नहीं कह सकते कि जब बाप था तो हमको क्यों गिरने दिया? उसने गिरने थोड़ेही दिया, लेकिन अगर हम गिरे नहीं तो बाप फिर चढ़ाने कैसे आवे, गिरे हैं तभी तो वह आया है। उसका गायन भी है पतित को पावन करने वाला, अगर पतित ही न हों तो पावन करने वाला उसको कहें भी कैसे? तो पतित होना है फिर पावन होना है, फिर पावन से पतित होना है, यह सारा चक्कर है। इसलिये इस चक्कर को भी समझना है और खुद को पतित से पावन बनाना है, पूज्यनीय बनना है तब ही हमारी भी महिमा है। तो बनने और बनाने वाले की महिमा गाई जाती है। इसमें बनने वाला और बनाने वाला दो चाहिए ना। ऐसे थोड़ेही बनने वाला भी खुद, बनाने वाला भी खुद। आत्मा सो परमात्मा, परमात्मा सो आत्मा.. ऐसे तो नहीं है ना। बनने वाले अलग और बनाने वाला अलग है। इसलिये इन बातों में कभी मूँझना नहीं है, हमको बनना है, ऊंचा उठना है, पुरुषार्थ करना है। बाप आ करके हमको यथार्थ पुरुषार्थ क्या होता है, उसकी समझ देते हैं। ऊंच प्राप्ति का पुरुषार्थ कौन सा है, वह अभी सिखाते हैं, इतना टाइम हमको किसी ने वह पुरुषार्थ नहीं सिखलाया क्योंकि सिखलाने वाले खुद ही सब चक्कर में हैं ना। ऊंचा उठाने वाला भी अभी आया है और आ करके ऊंच उठने का पुरुषार्थ अभी बताते हैं। उसको हम जितना धारण करते हैं उतनी प्रालब्ध पाते हैं। तो यह सभी नॉलेज बुद्धि में है, उसके लिए हमको क्या मेहनत और क्या पुरुषार्थ करना है, उसका ध्यान रखना है। बाकी चक्र को तो अपने टाइम पर चलना ही है।

तो बाप जो अभी ऐसा ऊंच कार्य करने के लिये उपस्थित हुआ है, उससे पूरा-पूरा लाभ लेना है। बाकी क्राइस्ट, बुद्ध जिन्होंने भी आ करके कोई कार्य किया, तो वो कार्य दूसरा है, वह हमारे उतरती कला के समय का है। अभी यह चढ़ती कला का समय है तो समय को भी समझना है। यह समय है सब आत्माओं को वापस ले जाने का, ऊंचा ले जाने का। वह (धर्म स्थापक) तो आते ही द्वापरकाल से हैं और कलियुग को नीचे होना ही है। तो उन्हीं को नीचे ही आना है, पावन से पतित ही बनना है इसलिए उनके लिये नहीं कहा जा सकता है कि वह पतितों को पावन करने वाले हैं। नहीं। यह एक ही है जो आ करके पतितों को पावन बनाते हैं अथवा सर्व आत्माओं को गति सद्गति में ले जाते हैं। इसलिये एक की ही रेसपान्सिबिलिटी हो गई ना। कोई कितनी भी बड़ी (महान) आत्मा है वो पहले पवित्र आती है फिर उनको नीचे ही जाना है क्योंकि उनके चक्र का ऐसा टर्न है इसलिये नीचे ही आना है। अपने नियम अनुसार सबको अपना वो चक्र पार करना होता है। तो अभी टाइम है चढ़ने का और चढ़ाने वाला एक ही निमित्त है तो हमको अभी वह सौभाग्य बाप से लेना है। अच्छा।

अभी यहाँ आपकी बहुत इनकम हो रही है, एक से सौ गुणा, हजार गुणा अपनी कमाई जमा कर रहे हो। जो उत्साह से करता है तो उस उत्साह का भी मिलता है। जो लाचारी से करता है, तंग होकर मुश्किल से करता है या कोई दिखावे के लिए करता है तो उसे उसी हिसाब से मिलता है। कईयों के अन्दर रहता है दुनिया देखे हमने यह किया, वह किया... कई दान भी करते हैं तो दिखाऊ दान करते हैं कि सबको पता चले, तो उस दान की ताकत आधा तो निकल जाती है। इसलिए गुप्त का बहुत महत्व है, उसमें ताकत बनती है, उसका हिसाब ज्यादा मिलता है और शो करने से उसका हिसाब कम पड़ जाता है। तो करने का भी ढंग है। सतोगुणी, रजोगुणी, तमोगुणी करने में भी हिसाब है। तो कैसे हम अपने कर्मों को श्रेष्ठ बनायें और किस तरह से करें जिसमें हमारा भाग्य ऊंचा बनें तो वो बनाने का भी ढंग चाहिए। अगर ऐसे अच्छे ढंग से चल रहे हैं तो जरूर ऊंची तकदीर बनती जा रही है। अच्छा बापदादा और माँ का मीठे-मीठे बहुत अच्छे और सपूत बच्चों प्रति यादप्यार और गुडमार्निंग।

वरदान:- लौकिक को अलौकिक में परिवर्तन कर घर को मन्दिर बनाने वाले आकर्षणमूर्त भव

प्रवृत्ति में रहते घर के वायुमण्डल को ऐसा बनाओ जिसमें कोई भी लौकिकता न हो। कोई भी आये तो अनुभव करे कि यह अलौकिक है, लौकिक नहीं। यह साधारण घर नहीं लेकिन मन्दिर है। यह है पवित्र प्रवृत्ति वालों की सेवा का प्रत्यक्ष स्वरूप। स्थान भी सेवा करे, वायुमण्डल भी सेवा करे। जैसे मन्दिर का वायुमण्डल सबको आकर्षित करता है ऐसे आपके घर से पवित्रता की खुशबू आये तो वह खुशबू स्वतः चारों ओर फैलेगी और सबको आकर्षित करेगी।

स्लोगन:-

मन-बुद्धि को दृढ़ता से एकाग्र कर कमजोरियों को

भस्म कर दो-तब कहेंगे सच्चे योगी।